विश्व विवाह दिवस **-** रविवार **11** फरवरी **2024**

उपदेश रूपरेखा

विषय - विवाह पुनः प्रवर्तन

थीम पद्य: यूहन्ना 10:10 (बी)

परिचय:

विवाह एक सुंदर उपवन की तरह होता है, ईडन के बगीचे की तरह जो भगवान ने आदम और हव्वा को दिया था। भगवान ने विवाह को फलदायी, प्रचुरता, अधिकार और प्रभुत्व का आशीर्वाद प्रदान किया।

मनुष्य ने इसे खो दिया क्योंकि उसने पाप किया था। विवाह में अब भगवान की उपस्थिति नहीं रही। परंतु यीशु मसीह एक मसीहे के रूप में आए और उन्होंने अपने ही खून से फिरौती की कीमत चुकाई और विवाह की सभी आशीषों को हमारे लिए छुड़वा दिया।

1) विवाहों को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता क्यों है**?**

- क्योंकि शादियाँ बेजान और जीवन रहित हैं - पति-पत्नी एक दूसरे के लिए अच्छा जीवन साथी बनने के बजाय एक ही छत के नीचे अजनबियों की तरह रह रहे हैं।

- शादियाँ कमज़ोर हैं। पति और पत्नी अपनी शादी में स्नेह और प्यार का निवेश करने के बजाय एक-दूसरे को हल्के में ले रहे हैं।

- विवाह बंधन बन गए हैं - पति/पत्नी क्रॉस की शक्ति से मुक्त होने के बजाय व्यसनों/अवैध संबंधों आदि में लिप्त हैं।

- विवाह अंधेरे/कालकोठरी में दफ्न हो गए हैं - विवाह में पीड़ित रिश्ते में घुटन और निराशा महसूस करते हैं - उन्हें उन गड्ढों को पहचानने की आवश्यकता है जो उनके दुश्मन ने उनके विवाह में बनाए हैं और यीशु और उनके वचन के अधिकार से उस अंधेरे को नष्ट कर दिया है।

- विवाह उद्देश्यहीन होते हैं - पति और पत्नी को यह एहसास नहीं होता कि भगवान का, उन्हें विवाह के बंधन में एकजुट करने का एक प्रमुख उद्देश्य है और यही कारण है कि वे एक आत्मसंतुष्ट जीवन जीते हैं।

2) विवाह को किस प्रकार पुनर्जीवित किया जा सकता है**?**

चरण **1--** पुनः संरेखित करें।

मुक्तिदाता **-** यीशु के साथ जुड़ जाओ और जीवन विध्वंसक से अलग हो जाओ (जॉन10:10)

- पति और पत्नी को यह याद रखना चाहिए कि ईश्वर उनके अनुबंध विवाह का हिस्सा है (मलाकी 2:14) और

- पति और पत्नी को अपने विवाह में प्रचुर मात्रा में खुशी के जीवन का अनुभव करने के लिए यीशु के मुक्ति कार्य का अनुभव करना चाहिए।

विवाह के लिए परमेश्वर के वचन के साथ जुड़ें और विवाह के बारे में दुनिया के दृष्टिकोण को अस्वीकार करें **(1 Cor 2:12-13)**

- आज दुनिया ने विवाह को विकृत कर दिया है और विवाह को फिर से परिभाषित करने की कोशिश कर रही है। लेकिन एक सच्चे आस्तिक के रूप में मुझे जानना चाहिए कि परमेश्वर का वचन क्या कहता है।

- हमारी संस्कृति बदल सकती है लेकिन परमेश्वर का वचन वही रहता है। समान-लिंग विवाह, बिना शादी किए एक साथ रहने का चलन बढ़ रहा है। जब तक हम स्पष्ट नहीं होंगे हम अपने बच्चों के नैतिक पतन को नहीं रोक सकते।

शक्ति की प्राप्ति के लिए अपने शारीरिक निर्भरता त्यागकर पवित्र आत्मा के साथ जुड़े। **(**ज़ेक**.4:6)**

- पति और पत्नी को अपने व्यक्तिगत जीवन और विवाह दोनों में पवित्र आत्मा की शक्ति पर विश्वास करना चाहिए और उनकी शक्ति का अनुभव करना चाहिए।

अपने विवाह के लिए ईश्वर के उद्देश्य के अनुरूप ही रहें और दुश्मन की साजिश को पहचानें और उसे **"**न**"** कहें। **(Col 1:17)**

- पति और पत्नी को इस बात पर पूर्ण विश्वास करना चाहिए कि भगवान का उन्हें इस जीवन में एकजुट करने का एक उद्देश्य है। भगवान के ऐसे कामों की हमें समझ होनी चाहिए।

चरण **2-** पवित्र बनें

यीशु के रक्त से अपने को धोएं और पवित्र बनें **-** भगवान चाहते हैं कि हमारा विवाह सदा पवित्र रहे और सदा निष्कलंक हो **(**हिब्रूज **13:4)**।

- स्वेच्छा से स्वीकार करें और मन से कबूल करें कि हमने अपने विवाह शैया को विभिन्न तरीकों से अपवित्र किया है (Proverb 28:13)।

- हमारे पापों को धोने के लिए प्रभु यीशु के रक्त की याचना करें।(1 यूहन्ना 1:7)

- और हमें हर समय पवित्र करें (1 थिस्स.5:23)।

भगवान के लिए सदा पवित्र और समर्पित बनें।

-पवित्र जीवन ईश्वर के लिए अलग रखा गया एक पवित्र जीवन होता है।

-पवित्र जीवन एक ऐसा पवित्र जीवन है जो हमें ईश्वर को प्रत्यक्ष रूप से देखने में सक्षम करेगा, हमारे जीवन में चमत्कार करेगा। (जोशुआ 3:5)

-पवित्र जीवन हमें प्रकाश की संतान के रूप में चलने में सक्षम बनाएगा।(इफिसियों 5:8)।
-प्रत्येक विवाह को पवित्र किया जाना चाहिए।

चरण **3 -** पवित्र आत्मा द्वारा संचालित हों

- पवित्र आत्मा की उपस्थिति और शक्ति के द्वारा ईश्वर की प्रचुरता से हुआ विवाह ही ईश्वर की इच्छा होती है।

- इसलिए, हमें पवित्र आत्मा को अपने विवाह के आयोजन में आमंत्रित करना चाहिए।

- हमें पवित्र आत्मा की आवाज़ पर आज्ञाकारी होना चाहिए, क्योंकि वह हमारे विवाह की हर स्थिति की सच्चाई को भली भांति जानता है। (यूहन्ना 16:13)

- उस पवित्र आत्मा के द्वारा उपयोग किए जाने के लिए सदैव तैयार रहें।

- जब हम अपने विवाह के आयोजन में पवित्र आत्मा को आमंत्रित करते हैं; तब उनकी उपस्थिति हमें बड़ी हिम्मत देती है।

निष्कर्ष: जब विवाहों को यीशु द्वारा रचा जाता है, ईश्वर द्वारा पवित्र किया जाता है और पवित्र आत्मा द्वारा संचालित किया जाता है, तो ऐसे विवाहों में पुनरुत्थान होगा। तब प्रत्येक पुनर्जीवित विवाह, परमेश्वर के पावन सान्निध्य व राज्य में एक शक्तिशाली साधन बन जाएगा।